वाइन से स्वास्थ्य लाभ का दावा और धोखाधड़ी

एक समय था जब शोधकर्ताओं ने दावा किया था कि लाल वाइन (एक किस्म की शराब) के सेवन से स्वास्थ्य लाभ मिलता है। आगे चलकर यह भी कहा गया था कि सफेद वाइन भी हृदय रोग की रोकथाम में मददगार होती है। मगर हाल ही में कनेक्टीकट विश्वविद्यालय ने खुलासा किया है कि इस परिणाम तक पहुंचाने वाले अनुसंधान में धोखाधड़ी शामिल थी।

लाल वाइन से मिलने वाले स्वास्थ्य लाभ का दावा कनेक्टीकट विश्वविद्यालय के ही दीपक दास ने किया था। दास उस समय विश्वविद्यालय में शल्य क्रिया के प्रोफेसर थे और हृदय-रक्तवाहिनी अनुसंधान विभाग के प्रमुख थे। विश्वविद्यालय ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि दास "आंकड़ों में 145 हेराफेरी और धोखाधड़ी के दोषी हैं।"

दरअसल, 2008 में किसी अज्ञात व्यक्ति ने सुराग दिया था कि शायद दास के शोध पत्रों में आंकड़ों की हेराफेरी की गई है। यह शिकायत यूएस ऑफिस ऑफ रिसर्च इंटेग्रिटी से की गई थी जिसने विश्वविद्यालय को सूचना दी। इसके बाद विश्वविद्यालय ने पूरे मामले की जांच शुरू की थी और हाल ही में इस जांच की भारी भरकम रिपोर्ट प्रकाशित हुई है। इस रिपोर्ट में कम से कम 100 शोध पत्रों की जांच से उभरे निष्कर्ष शामिल हैं। इस रिपोर्ट के आधार पर विश्वविद्यालय ने 11 शोध पत्रिकाओं को इसकी सूचना भेजी है।

हाल के वर्षों में दास यह बताकर काफी मशहूर हुए थे कि लाल वाइन के नियमित सेवन से स्वास्थ्य लाभ होता है। आगे चलकर उन्होंने यह भी दावा किया था कि न सिर्फ लाल वाइन बल्कि सफेद वाइन और बीयर पीना भी स्वास्थ्यवर्धक है। उनका मुख्य ज़ोर एक यौगिक पर था जो लाल वाइन में पाया जाता है। रेसवेरेटॉल नामक यह यौगिक तब से काफी प्रसिद्ध हो चुका है।

विश्वविद्यालय की जांच रिपोर्ट से पता चलता है कि दास ने एक प्रोटीन परीक्षण 'वेस्टर्न ब्लॉट प्रोटीन एनालिसिस' के आंकड़ों में हेराफेरी की थी। इसके अलावा दास के कंप्यूटर्स पर उपलब्ध फाइल्स के अवलोकन से पता चला है कि उन्होंने चित्रों में भी फेरबदल किए थे। ***(स्रोत फीचर्स)***